वेद-पुराण-साहित्य-साहित्यशास्त्र-व्याकरण-दर्शन-ज्योतिष-भारतीय संस्कृति आदि विविध विषयों पर विषय-विशेषज्ञ मूर्धन्य विद्वानों के शोध-आलेखों का उत्कृष्ट संग्रह

शाश्वती

डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय स्मृतिग्रन्थ

Śāśvatī

Dr. Santosh Kumar Pandey Commemoration Volume

सम्पादक मंडल

शैलेश कुमार मिश्र • कंजीव लोचन

धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी • अवधेश कुमार पाण्डेय

।। श्रीः ।।

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

700

शाश्वती

डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय स्मृतिग्रन्थ

Śāśvatī

Dr. Santosh Kumar Pandey Commemoration Volume

वेद-पुराण-साहित्य-साहित्यशास्त्र-व्याकरण-दर्शन-ज्योतिष-भारतीय संस्कृति आदि विविध विषयों पर विषय-विशेषज्ञ मूर्धन्य विद्वानों के शोध-आलेखों का उत्कृष्ट संग्रह

सम्पादक मंडल

शैलेश कुमार मिश्र • कंजीव लोचन

धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी • अवधेश कुमार पाण्डेय

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

© **सर्वाधिकार सुरक्षित।** इस प्रकाशन के किसी भी अंश का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण या किसी भी विधि (जैसे-इलेक्ट्रोनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या कोई अन्य विधि) से प्रयोग या किसी ऐसे यंत्र में भंडारण, जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो, सम्पादक मंडल की पूर्वलिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

इस स्मृतिग्रन्थ में प्रकाशित आलेख सम्बद्ध लेखकों के निजी विचार हैं। किसी विवाद की स्थिति में उसका समस्त दायित्व सम्बद्ध लेखक का होगा। सम्पादकगण एवं प्रकाशक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

शाश्वती–डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय स्मृतिग्रन्थ

ISBN : 978-93-94829-29-9

प्रकाशक :
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के 37/117 गोपाल मन्दिर लेन, पोस्ट बॉक्स न. 1129
वाराणसी 221001
दूरभाष : +91 542 2335263, 2335264
e-mail : chaukhambasurbharatiprakashan@gmail.com
website : www.chaukhamba.co.in
@chaukhambabooks
@chaukhambabooks

© **सर्वाधिकार सुरक्षित**
प्रथम संस्करण : 2022
₹ 4995.00

वितरक :
चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
4697/2 ग्राउण्ड फ्लोर, गली न. 21-ए
अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली 110002
दूरभाष : +91 11 23286537, 41530947 (मो.) +91 9811104365
e-mail : chaukhambapublishinghouse@gmail.com
*
अन्य प्राप्तिस्थान :
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
4360/4, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली 110002
*
चौखम्बा विद्याभवन
चौक (बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे)
पोस्ट बॉक्स न. 1069
वाराणसी 221001
मुद्रक : ए.के. लिथोग्राफर, दिल्ली

धर्मशास्त्रविमर्श

81. धर्मशास्त्र में वर्णित भारतीय न्याय प्रक्रिया- प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल 542
82. स्मृति निरूपित दण्ड विधान एवं उसकी प्रासङ्गिकता- डॉ. हिमांशुशेखर त्रिपाठी 557
83. अविभाज्यधनानि- डॉ. मीनाक्षी मिश्रा 563
84. विश्व में मनुस्मृति की प्रासंगिकता- डॉ. अवधेश कुमार पाण्डेय 572
85. स्मृतियों में शैक्षिक पर्यावरण- डॉ. प्रबोध कुमार पाण्डेय 575
86. धर्मशास्त्रों में आपद्धर्म-रश्मि मिश्रा 578

ज्योतिषशास्त्रविमर्श

87. ज्योतिष का वेदाङ्गत्व : एक अनुशीलन- प्रो. भारतभूषण मिश्र 592
88. वास्तुशास्त्रसम्मत द्वारविन्यास- डॉ. अशोक थपलियाल 599
89. गणित की उन्नति में लीलावती का अवदान- डॉ. सुनील मुर्मू 608
90. Astrology and human health (According to Prasnamarga)- Dr. Jitesh Paswan 612

साहित्यविमर्श

91. काव्यकृति के संदर्भ में - कालिदास तथा कबीरः एक विमर्श- प्रो. कमलेशकुमार छ. चोकसी 616
92. अभिज्ञानशाकुन्तल : पाठभेद-जनित दृश्यपरिवर्तन- प्रो. वसन्तकुमार म. भट्ट 624
93. संस्कृत साहित्य में प्रेमतत्त्व- प्रो. रमाकान्त पाण्डेय 635
94. किं श्रीहर्षो मिथिलानिवासी?- डॉ. उदयनाथझा 'अशोकः' 666
95. Cultural and Political Elements Noticed in the *Prasannarāghava*- Dr Kameshwar Shukla 673
96. कुमारसम्भव-वामनपुराणयोः कथासाम्यम्- डॉ. शरदिन्दुकुमारः त्रिपाठी 680
97. कालिदास के काव्यों में संस्कार : वर्तमान उपादेयता- डॉ. रुबी 688
98. संस्कृत साहित्य में मानव के समग्र विकास की अवधारणा- डॉ. शशिकांत पाण्डेय 697
99. साहित्यस्य लोकमङ्गलकारिता- डॉ. शैलेश कुमार मिश्र 701
100. कालिदास की पर्यावरण चेतना : अभिज्ञानशाकुन्तल के आलोक में- डॉ. श्याम कुमार झा 711
101. शुकनासोपदेश की साम्प्रतिक प्रासंगिकता- प्रमोद कुमार 720
102. मुद्राराक्षस में भंग्यन्तर कथन- डॉ. उषा किरण 723
103. कुमारसंभवम् महाकाव्य में करुण रस का विवेचन- डॉ. हिमावती बिन्हा 727
104. कालिदास का चित्रकला-वैदुष्य- डॉ. लाडली कुमारी 733
105. कालिदासीय काव्यों में बिम्ब-विधान- डॉ. धनंजय कुमार मिश्र 738
106. मेघे माघे गतं वयः- डॉ. धनञ्जयवासुदेवो द्विवेदी 748
107. मृच्छकटिक में स्त्री चरित्र- डॉ. मनीषा कुमारी पाण्डेय 762
108. चारुदत्तमृच्छकटिकयोः आधाराधेयत्वम्-डॉ. सन्तोष कुमार पाण्डेय 766
109. अश्वघोष के काव्यों में योग का स्वरूप- डॉ. श्रीमित्रा 769
110. कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते- डॉ. शिशिर कुमार पाण्डेय 772

स्मृति निरूपित दण्ड विधान एवं उसकी प्रासङ्गिकता

डॉ. हिमांशुशेखर त्रिपाठी

स्मृतिकालीन दण्डविधान का स्वरूप अत्यन्त व्यापक, विशद एवं समाजोपयोगी था। दण्डविधान का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्र एवं समाज की सुरक्षा था। राष्ट्र की जनता चोरी, हत्या, डाका, व्यभिचार इत्यादि से विमुख हो जाए, प्रजा सुख-शान्ति से जीवन-यापन करे, राष्ट्र का विकास हो, जनशक्ति समृद्धि एवं सुरक्षा में लगे, यही दण्ड का उद्देश्य था। महर्षि मनु की मान्यता थी कि केवल दण्ड के भय से संसार न्यायपथ से विचलित नहीं होता है।[1] इसी तरह महाभारत में भी उल्लेख मिलता है कि कोई राष्ट्र दण्ड के भय से अपराध नहीं करता है।[2] महर्षि याज्ञवल्क्य की भी यही मान्यता है कि स्वधर्मस्खलित को दण्ड के द्वारा ही उचित मार्ग पर लाना चाहिए।[3] शुक्र का भी मत है कि दण्ड से पशु भी सुधारे जा सकते हैं एवं उन्हें नियन्त्रित किया जा सकता है। कामन्दक ने भी दण्ड से अपराधी में सुधार लाने की चर्चा की है। याज्ञवल्क्य ने तो यहाँ तक कहा है कि दण्ड का उद्देश्य चरित्र, नैतिकता तथा मानवीय गुणों का विकास है। इनकी मान्यता थी कि कि सुशिक्षा एवं सद्वचन, प्रेरक गाथाओं से बन्दी को प्रेरित करना चाहिए कि वह अपने दुर्गुणों की पुनरावृत्ति न करे, एक नेक इन्सान बनने की भावना जागृत करे। अपने लिए रोजगार एवं व्यवसाय करने को तत्पर हो जाए। इसी तरह विभिन्न प्रकार के अपराधियों को अपराधकर्म से विमुख होने की चेतना जागृत करने की प्रेरणा स्मृतियों में दी गयी है।

कुछ प्राचीन स्मृतिकार सुधारवादी भी थे। वे अपराध को एक मानसिक रोग मानते थे। उनकी मान्यता थी कि अपराधी को दण्डित नहीं करके उनका उपचार करना चाहिए। जिन कारणों से वह अपराध करता है उन कारणों का पता लगाना चाहिए एवं इस प्रकार के अपराधी में सुधार लाने का प्रयास करना चाहिए। फलतः ये कठोर दण्ड या प्राणदण्ड के विरोधी थे। ये अपराध के हल्के दण्ड के पोषक थे। महात्मा गाँधी की भी मान्यता थी कि पाप से डरो, पापी से नहीं। प्रायश्चित्त की धारणा का आधार सुधार ही था।

स्मृतिकालीन समाज में कोई भी निन्दनीय कार्य करने पर प्रायश्चित करने का विधान था जिससे अन्तरात्मा में सुधार हो जाए। इसीलिए वर्णाश्रम एवं धर्मशास्त्र की शिक्षा द्वारा व्यक्ति को सदाचार के लिए प्रेरित किया जाता था। इसी भावना के आधार पर दण्डसिद्धान्त के इस सुधारात्मक सिद्धान्त (Reformative) या परिष्कारात्मक विज्ञान की स्थापना की गयी थी।

धर्मशास्त्रीय-प्रबन्ध-प्रसूनाञ्जलिः

(स्व. उर्मिलात्रिपाठिदेव्याः पुण्यस्मृतौ उपहृतः)

लेखकः- प्रो. वाचस्पतिशर्मा त्रिपाठी

सम्पादकः :

डॉ. हिमांशुशेखर त्रिपाठी

धर्मशास्त्रीय-प्रबन्ध-प्रसूनाञ्जलिः

(स्व० उर्मिलात्रिपाठिदेव्याः पुण्यस्मृतौ उपहृतः)

लेखक :-

राष्ट्रपति-सम्मानितः

आचार्यवाचस्पतिशर्मा त्रिपाठी

सम्पादक :-

डॉ० हिमांशुशेखर त्रिपाठी

2021

कला प्रकाशन

बी. 33/33 ए-1, न्यू साकेत कालोनी,

बी0 एच0 यू0, वाराणसी-5

प्रकाशक :

कला प्रकाशन

बी. 33/33 ए - 1, न्यू साकेत कालोनी,

बी0 एच0 यू0, वाराणसी-5

दूरभाष : 0542-2310682

Email : kalaprakashanvns@yahoo.in

© लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रस्तुत पुस्तक में दिये गये सभी तथ्य लेखक के हैं, प्रकाशक का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। विवाद की स्थिति में लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा।

आचार्य वाचस्पतिशर्मा त्रिपाठी

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN : 978-93-87199-99-6

मूल्य : 950.00 /- रुपये

कम्प्यूटर अक्षर संरचना :

कला कम्प्यूटर मीडिया

बी. 33/33 ए - 1, न्यू साकेत कालोनी,

बी0 एच0 यू0, वाराणसी-5

दूरभाष : 0542-2310682

मुद्रक :

मनीष प्रिंटिंग प्रेस

साकेत नगर कालोनी, बी.एच.यू.,

वाराणसी -221005

सम्पादकीयम्

राष्ट्रपतिं-सम्मानितैः पूज्यपितृचरणैः आचार्यवाचस्पतिशर्मत्रिपाठिमहोदयैः भारतवर्षस्य विभिन्नविश्वविद्यालयेषु संस्थानेषु च समये-समये वैदुष्यपूर्णानि विविधव्याख्यानानि, शोधपत्राणि च प्रस्तुतानि। तेषु केचन प्रबन्धाः अनेकशोधपत्रिकासु प्रकाशिताः, अपरे विभिन्नविद्वद्गोष्ठीषु चर्चिताः, इतरे च सारस्वतव्याख्यानरूपेण प्रस्तुताः अद्यावधि अप्रकाशिता एव विराजन्ते। तानेव यत्र-तत्र विप्रकीर्णान् स्फुटप्रबन्धान् एकत्र सङ्गृह्य, पाण्डुलिपिं संशोध्य, सम्पाद्य च पितृवर्य्याणामादेशानुसारमेषः लघुग्रन्थः प्राकाश्यं नीयते मया।

सोऽयं 'धर्मशास्त्रीय-प्रबन्धप्रसूनाञ्जलिः' इत्यभिधः लघुग्रन्थः स्वर्गतानां मातृचरणानां श्रीमतीनाम् उर्मिलात्रिपाठिचरणानां पुण्यस्मरणे श्रद्धाप्रसूनाञ्जलिरूपेण उपायनीक्रियते विपश्चितां पुरत इति शमस्तु।

विनयावनतः-

डॉ० हिमांशुशेखरत्रिपाठी

(सम्पादकः)

सम्पादकीय

देश के मूर्धन्य धर्मशास्त्रज्ञ, राष्ट्रपति-सम्मानित, पूज्य पितृचरण आचार्य वाचस्पति शर्मा त्रिपाठी द्वारा भारतवर्ष के विभिन्न विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों तथा सारस्वत अनुष्ठानों में समय-समय पर शताधिक वैदुष्यपूर्ण व्याख्यान तथा गवेषणात्मक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। इनमें से कुछ शोध पत्र देश के प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए, कतिपय निबन्ध विभिन्न विद्वद् गोष्ठियों में चर्चित हुए तथा अनेक सारस्वत विशिष्ट व्याख्यान अद्यावधि अप्रकाशित ही हैं। ऐसे यत्र-तत्र विप्रकीर्ण स्फुट व्याख्यानों एवं शोध निबन्धों का यतस्ततः परिश्रमपूर्वक एकत्र संग्रह कर, पाण्डुलिपि का संशोधन एवं सम्यक् सम्पादन कर पूज्य पिताजी के आदेशानुसार प्रस्तुत लघुकलेवर ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है।

"धर्मशास्त्रीय-प्रबन्ध प्रसूनाञ्जलि" नामक यह ग्रन्थ पूज्या स्वर्गीया मातृचरण श्रीमती उर्मिला त्रिपाठी जी की पुण्यस्मृति में श्रद्धा-प्रसूनाञ्जलि के रूप में सुधी-समुदाय के समक्ष उपायनी करते हुए विद्वदवर्ग के समक्ष श्रद्धावनत हूँ।

डॉ० हिमांशुशेखरत्रिपाठी

(सम्पादक)

(6)

गङ्गाधरामृतम्

(स्वर्गीयाचार्यप्रवराणां पण्डितगङ्गाधरशर्मणां स्मृतिग्रन्थः)

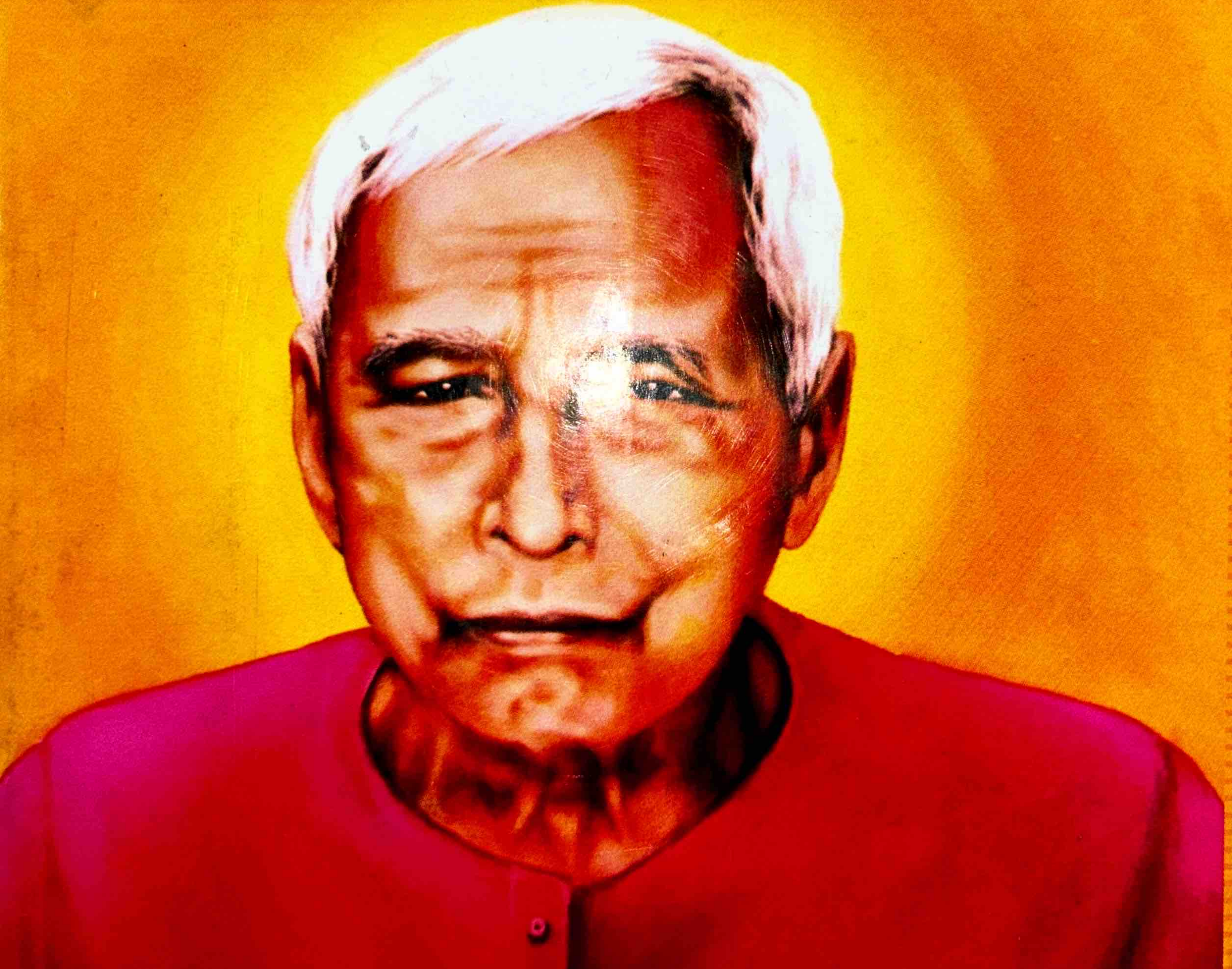

प्रधानसम्पादक :
प्रो० (डा.) श्रीपतित्रिपाठी
प्राचार्योध्यक्षश्च
कामेश्वरसिंहदरभङ्गा-संस्कृतविश्वविद्यालयः, दरभङ्गा

गङ्गाधरामृतम्

(स्वर्गीय आचार्य-पं. गङ्गाधरशर्मणां स्मृतिग्रन्थः)

प्रधान सम्पादक :

प्रो० (डा.) श्रीपति त्रिपाठी

प्राचार्योऽध्यक्षश्च

कामेश्वरसिंहदरभंगासंस्कृत विश्वविद्यालयः, दरभङ्गा

सम्पादक :

डा. हिमांशुशेखर त्रिपाठी

सहायकप्राध्यापकः

लालबहादुरशास्त्री-केन्द्रीय-संस्कृत-विश्वविद्यालयः, नवदेहली

प्रकाशक :

कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी

2021

गङ्गाधरामृतम्

(स्वर्गीय आचार्य-पं. गङ्गाधरशर्मणां स्मृतिग्रन्थः)

प्रधान सम्पादक :

प्रो० (डा.) श्रीपति त्रिपाठी

प्राचार्योऽध्यक्षश्च

कामेश्वरसिंहदरभंगासंस्कृत विश्वविद्यालयः, दरभङ्गा

ISBN : 978-93-88051-18-7

© प्रो० (डा.) श्रीपति त्रिपाठी

प्रकाशक : कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी

प्लाट नं. 26- रोहितनगर कॉलोनी

बी.एच.यू., वाराणसी-5

प्रथम संस्करण : 2021

प्रति : 300

मूल्य : 2000.00

मुद्रक : प्रिंटवेल, टावर, दरभंगा

स्वर्गीय आचार्य-पं. गङ्गाधरशर्मस्मृतिग्रन्थप्रकाशनसमितिः

कार्यसमितिः

संरक्षकः :-

म.म. डा. रामकरण शर्मा (नई दिल्ली)

म.म. डा. हरिहर झाः (पुरी, ओडिसा)

प्रो. (डा.) राधावल्लभ त्रिपाठी (मध्यप्रदेश)

प्रो. (डा.) मिथिला प्रसाद त्रिपाठी (मध्यप्रदेश)

प्रो. (डा.) अभिराज राजेन्द्र मिश्रः (शिमला)

अध्यक्षः :-

प्रो. (डा.) वाचस्पति शर्मा त्रिपाठी

कोषाध्यक्षौ :-

प्रो. (डा.) प्रजापति त्रिपाठी

श्री शशाङ्क-शेखर त्रिपाठी

सदस्या :-

ई. सुरपति शर्मा

श्री रविशंकर त्रिपाठी

श्री आशुतोष त्रिपाठी

श्री अमिताभ त्रिपाठी

श्री सत्येन्द्र गौतमः

श्री संदीपकुमार पाण्डेयः

परामर्शदात्रीसमिति सदस्याः :-

आचार्य किशोर कुणालः, पूर्व-कुलपतिः (पटना)

प्रो. (डा.) चन्द्रकान्तः शुक्लः, पूर्व-कुलपतिः (रांची)

प्रो. (डा.) गङ्गाधर पण्डा, कुलपतिः (चाईवासा)

प्रो. (डा.) रमेशचन्द्र पाण्डेयः, कुलपतिः (नई दिल्ली)

प्रो. (डा.) शशिनाथ झाः, कुलपतिः (दरभंगा)

प्रो. (डा.) सर्वनारायण झाः, पूर्व-कुलपतिः (लखनऊ)

प्रो. (डा.) शिवाकान्त झाः, पूर्व-कुलपतिः (दरभंगा)

श्री उपेन्द्रनाथ शर्मा (छपरा)

प्रो. रामचन्द्र झाः, पूर्व-कुलपतिः (दरभंगा)

स्व. प्रो. किशोरचन्द्र महापात्रः (पुरी)

प्रकाशन-समिति-सदस्याः :-

प्रो. जयकृष्ण मिश्रः, पुरी

डा. सुधांशु शेखर त्रिपाठी, सीवानः

डा. वरुण कुमार झाः, दरभंगा

श्री अविनाश त्रिपाठी, मुंबई

श्री शीतांशुशेखर त्रिपाठी, नई दिल्ली

श्री मृगांकशेखर त्रिपाठी, रांची

डा. अखिलेशकुमार मिश्रः, दरभंगा

सम्पादक-मण्डलम् :-

प्रो. (डा.) पुरेन्द्र वारिकः (दरभंगा)

डा. विनय कुमार मिश्रः (दरभंगा)

डा. खगेश्वर मिश्रः (पुरी)

डा. पवन कुमार झाः (दरभंगा)

डा. शालिनी त्रिपाठी (दरभंगा)

डा. रामकृष्ण पाण्डेयः परमहंसः (इलाहाबाद)

प्रो. डा. माधवचन्द्र पण्डा (पुरी)

प्रो. डा. अतुलकुमार नन्दः (पुरी)

प्रो. डा. ललित कुमार साहुः (पुरी)

डा. सनन्दन त्रिपाठी

डा. सुधांशु शेखर महापात्रः (तिरुपति)

गङ्गाधरामृतम्

(स्वर्गीयाचार्यप्रवराणां पण्डितगङ्गाधरशर्मणां स्मृतिग्रन्थः)

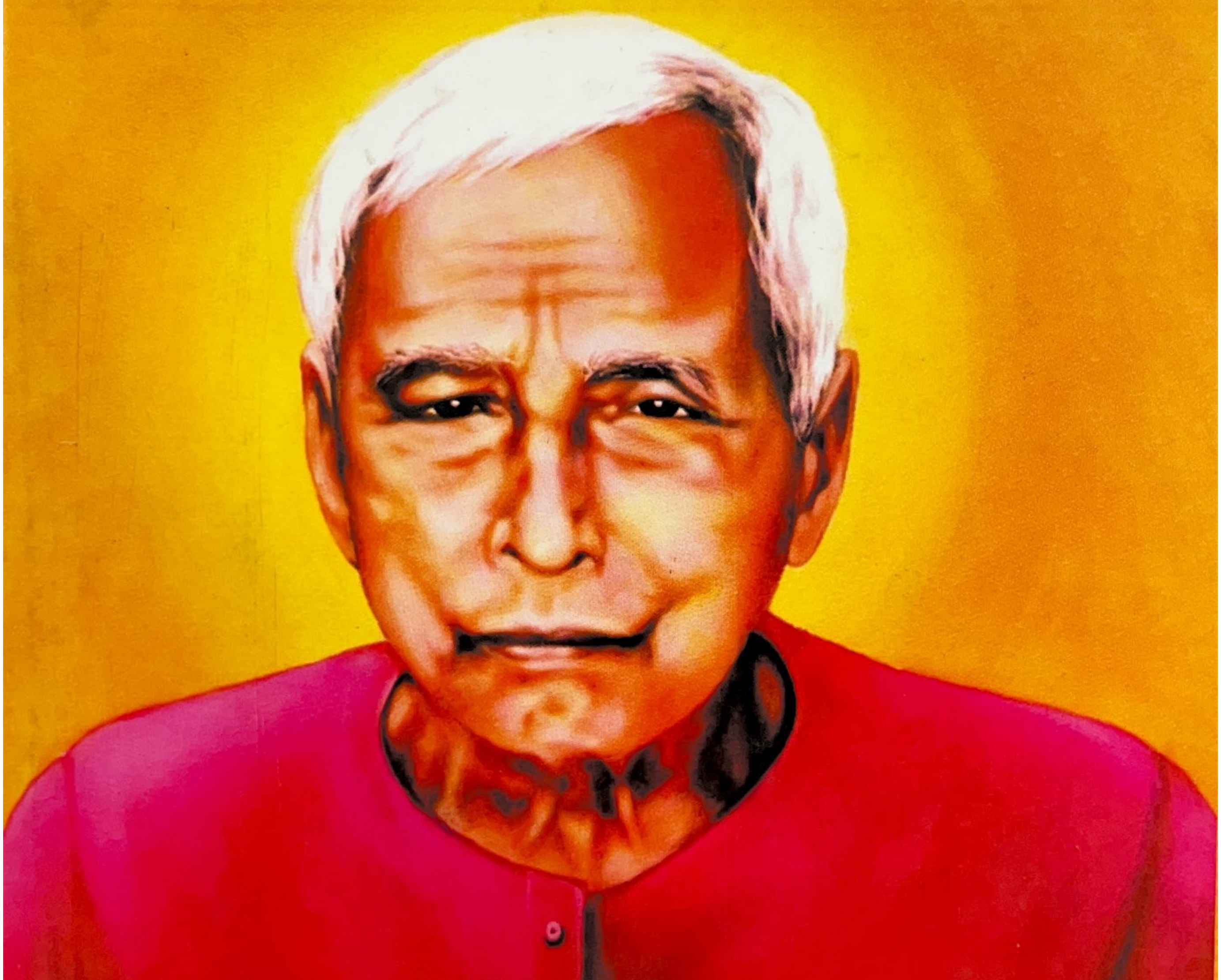

प्रधानसम्पादक :

प्रो० (डा.) श्रीपतित्रिपाठी

प्राचार्योध्यक्षश्च

कामेश्वरसिंहदरभंङ्गा-संस्कृतविश्वविद्यालयः, दरभङ्गा

गङ्गाधरामृतम्

(स्वर्गीय आचार्य-पं. गङ्गाधरशर्मणां स्मृतिग्रन्थः)

प्रधान सम्पादक :

प्रो० (डा.) श्रीपति त्रिपाठी

प्राचार्योऽध्यक्षश्च

कामेश्वरसिंहदरभंगासंस्कृत विश्वविद्यालयः, दरभङ्गा

सम्पादक :

डा. हिमांशुशेखर त्रिपाठी

सहायकप्राध्यापकः

लालबहादुरशास्त्री-केन्द्रीय-संस्कृत-विश्वविद्यालयः, नवदेहली

प्रकाशक :

कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी

2021

गङ्गाधरामृतम्
(स्वर्गीय आचार्य-पं. गङ्गाधरशर्मणां स्मृतिग्रन्थः)

प्रधान सम्पादक :
प्रो० (डा.) श्रीपति त्रिपाठी
प्राचार्योऽध्यक्षश्च
कामेश्वरसिंहदरभंगासंस्कृत विश्वविद्यालयः, दरभङ्गा

ISBN : 978-93-88051-18-7

© प्रो० (डा.) श्रीपति त्रिपाठी

प्रकाशक : कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी
प्लाट नं. 26- रोहितनगर कॉलोनी
बी.एच.यू., वाराणसी-5

प्रथम संस्करण : 2021

प्रति : 300

मूल्य : 2000.00

मुद्रक : प्रिंटवेल, टावर, दरभंगा

102. मीमांसा की दृष्टि से धर्मशास्त्र का तात्पर्य	डॉ. माधव जनार्दन रटाटे	345
103. उदररोग-चिकित्सा में भोजन व्यवस्था	डॉ. पूजा त्रिपाठी	348
104. स्त्री का महत्व	श्री रविशंकर त्रिपाठी	353
105. आदर्श भारतीय स्त्री का स्वरूप	श्री संदीप कुमार पाण्डेय	356
106. श्रीमद्भागवत्कार की दृष्टि में 'कृष्ण' का स्वरूप	कमलेश मिश्रा	359
107. न्याय दर्शन में व्याप्ति का स्वरूप	डॉ. रामप्रवेश पासवान	363
108. स्व. पं. रामनिवास उपाध्याय, संक्षिप्त व्यक्तित्व और कृतित्व	रजनीश कुमार उपाध्याय	365
109. भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन में अनुमान प्रमाण की संक्षिप्त अवधारणा	डॉ. माया कुमारी	368
110. धर्म एवं धर्मशास्त्रवाङ्मय : एक विहंगावलोकन	डॉ. हिमांशुशेखर त्रिपाठी	373
111. अन्तः सम्बन्धों की दृष्टि से शिक्षा और संस्कृति एक दूसरे के पूरक	डॉ. रामकेश्वर तिवारी	379
112. लोककला के क्षेत्र में मिथिला चित्रकला का महत्त्व	डॉ. मीनी झा	384
113. Yajnyavalkyasmriti : Economic Dimension	Dr. Mitranath Jha	388
114. The Influence of the *Bhagwadgita* on the Mental Horizon Of W.B.Yeats	Dr. Pawan Kumar Jha	395
115. Native Themes in Poetry of Sarojini Naidu	Dr. Naveen Kumar Jha	403
116. Human Rights and Corruption	Dr. Pradip Kumar Jha	410
117. Re-interpretation of Universal Religion : An Appraisal of Swami Vivekananda	Dr. Ashish Kumar	413
118. Sanatana Dharma : A Cure for Present Humanitarian	Dr. Krishnanand Jha	418
119. The Formulations of Friendship : A Ramayanic Perspective	Dr. Vishwanath M V	421

धर्म एवं धर्मशास्त्रवाङ्मय : एक विहंगावलोकन

डॉ. हिमांशुशेखर त्रिपाठी*

धर्म का महत्त्व

यह सम्पूर्ण विश्व प्रकृति का विस्तार है, हम जहाँ भी देखते हैं उसी का विस्तार पाते हैं। प्रकृति ही विश्वोत्पत्ति की सामग्री है। प्रकृति गुणमयी है। उसके पाश से मुक्त होकर अपनी आत्म-शक्ति को कैसे प्राप्त करें - इस सम्बन्ध में महर्षि वेदव्यास कहते हैं कि अभ्युदय के लिए सतत प्रयत्नशील लोगों की बुद्धि, धर्म में स्थित हो, परलोक में वही एक मात्र हितकारी मित्र है। बड़े-बड़े कार्यकुशल व्यक्तियों द्वारा पूर्ण परिचर्या से भी धन और युवतियाँ अपनी आत्मीय नहीं बन पातीं, तब वे अपने वश में कैसे हो सकती है? किसी कामना की पूर्ति, भय, लोभ या जीवन-रक्षा के लिए भी धर्म का त्याग नहीं करे। एक धर्म ही ऐसा मित्र है जो मरने पर भी जीव के साथ जाता है, बाकी सब तो शरीर के नाश होते ही छोड़ कर चले जाते हैं। इत्यादि वचनों के द्वारा धर्म की महत्ता एवं आवश्यकता निरूपित की गयी है।

श्रीमद्भगवद्गीता में भी भगवान् ने इसकी आवश्यकता बतायी है। एक बार अनेक मुनियों ने धर्म की आवश्यकता को ध्यान में रखकर सभी वर्णों एवं आश्रमों के धर्म की शिक्षा देने के लिए भगवान् मनु से प्रार्थना की थी। याज्ञवल्क्यस्मृति में भी इसी प्रकार धर्म की आवश्यकता बतायी गयी है। तन्त्रवार्तिक के रचयिता भट्टपाद ने भी वर्णाश्रमधर्म की शिक्षा देना ही धर्म-सूत्रों का कार्य बताया है। धर्म को आवश्यक समझकर भगवती श्रुति आज्ञा देती है कि धर्म करो, धर्म से सुख होता है, धर्म में प्रमाद नहीं करना चाहिए। तात्पर्य यह है कि विश्व की सुस्थिति के लिए धर्म की अत्यन्त आवश्यकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि धर्म की सभी कालों, सभी जगहों, सभी देशों, सभी प्रान्तों यानि पग-पग पर आवश्यकता है।

धर्म शब्द का अर्थ

व्याकरण-शास्त्रानुसार धर्म शब्द 'धृञ् धारणे' धातु से मन् प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न होता है। इसकी व्युत्पत्ति तीन प्रकार से हो सकती है-

1. जिससे लोक को धारण किया जाय वह धर्म है।
2. जो लोक को धारण करें वह धर्म है।
3. जो दूसरों से धारण किया जाय वह धर्म है।

महाभारतकार धर्म का लक्षण करते हैं कि धारण करने से इसे लोग धर्म कहते हैं। धर्म प्रजा को धारण करता है। जिसमें धारण की शक्ति हो वह धर्म है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि 'धर्म' शब्द बहुव्यापक है। अमरकोषकार ने भी धर्म शब्द के अनेक अर्थ बतलाये हैं। व्याकरण की दृष्टि से धर्म शब्द का अर्थ नियम बताया गया है। इस तरह इन वचनों को दृष्टिगत करते हुए हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते

*सहायकाचार्य (धर्मशास्त्र विभाग), श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ, नवदेहली-110016